

मन्नू भंडारी के 'आपका बंटी' उपन्यास में स्त्री-पुरुष सम्बन्धों का बिखराव एवं किशोरवय पर उसका दुष्प्रभाव

प्रो. यशवंत सिंह

हिन्दी विभाग, मणिपुर विश्वविद्यालय,
कांचीपुर, इम्फाल (मणिपुर)

शोध-सार: मानव समाज की इकाई परिवार है, जिसका आधार स्त्री या पुरुष नहीं वरन् इन दोनों का जोड़ है। इन दोनों का साहचर्य एवं सामंजस्य ही पारिवारिक जीवन को आगे बढ़ाता है, समाज विकास के लिए भावी पीढ़ियों का निर्माण करता है। सामाजिक विकास के इतिहास का अवलोकन करें तो देश और काल के विधान से कहीं और कभी पुरुष प्रधान रहा है, तो कुछ समाजों में स्त्री की प्रधानता रही है।

स्त्री-पुरुष सम्बन्धों को स्थायी आधार प्रदान करने के लिए 'विवाह' संस्था का निर्माण हुआ, जिसमें पति-पत्नी एक साथ जीवन-यापन करते हैं, संतति उत्पन्न करते हैं, उनका पालन-पोषण करते हैं। पश्चिमी देशों के समाजों से आगत समानता एवं स्वतंत्रता की अवधारणाओं के फलस्वरूप स्त्री-पुरुष के पारंपरिक सम्बन्धों में तनाव एवं बिखराव की शुरुआत हुई। सुप्रसिद्ध लेखिका मन्नू भंडारी द्वारा रचित 'आप का बंटी' उपन्यास की पृष्ठभूमि पति-पत्नी सम्बन्धों के इसी तनाव एवं बिखराव की करुणगाथा है। जिसमें टकराव तो स्त्री-पुरुष के अहम् का होता है लेकिन इसमें पिसता है निरीह किशोरवय बंटी, जिसमें उसका कोई दोष नहीं है। सच तो यह है कि बंटी किन्हीं दो-एक घरों में नहीं बल्कि आज के अनेक परिवारों में साँस ले रहा है। हम सभी को इस तरह की त्रासदकारी परिस्थितियों से बचने का भरसक प्रयास करना चाहिए।

बीज शब्द: स्त्री-पुरुष, परिवार-समाज, विवाह-संस्था, पति-पत्नी, पति-परमेश्वर, समानता-स्वतंत्रता, टकराव-बिखराव, निरीह बालक (बंटी)।

भूमिका: मानव समाज की इकाई परिवार है, जिसका आधार स्त्री या पुरुष नहीं, वरन् इन दोनों का जोड़ है। इन दोनों का साहचर्य एवं सामंजस्य ही पारिवारिक जीवन को आगे बढ़ाता है, समाज विकास के लिए भावी पीढ़ियों का निर्माण करता है। सामाजिक विकास के इतिहास का अवलोकन करें तो देश और काल के विधान से कहीं और कभी पुरुष प्रधान रहा है, तो कुछ समाजों में स्त्री की प्रधानता रही है।

स्त्री-पुरुष सम्बन्धों को स्थाई आधार प्रदान करने के लिए 'विवाह' नामक संस्था का निर्माण हुआ। जिसके अन्तर्गत दो अलग अलग परिवारों से आनेवाले स्त्री और पुरुष वैवाहिक संस्कारों से गुजरकर पत्नी और पति बन जाते हैं। वे एक साथ रहकर जीवन-यापन करते हैं, संतति उत्पन्न करते हैं, उनका पालन-पोषण करते हैं। जीवन के उतार-चढ़ावों में वे एक साथ चलते हैं, सुख-दुख, कष्ट भोगते हैं, जीवन-संघर्षों का साथ-साथ सामना करते हैं। यहीं स्त्री-पुरुष के गृहस्थ जीवन की शुरुवात होती है, जिसमें टकराव भी संभव होते हैं। लेकिन दोनों के आपसी सामंजस्य से गृहस्थी आगे बढ़ती रहती है, पारिवारिक जीवन सुखमय बना रहता है। यही सदियों से चले आ रहे स्त्री-पुरुष सम्बन्धों का परम्परागत एवं आदर्श स्वरूप रहा है।

स्त्री-पुरुष सम्बन्धों की परम्परागत अवधारणा में दोनों समान नहीं रहे बल्कि पुरुष का स्थान स्त्री से कुछ ऊपर ही रहा है। स्त्री हमेशा कहीं पारिवारिक मर्यादाओं, तो कहीं ममत्व के वशीभूत होकर आत्मसमर्पण करती रही है। इसी से पति परमेश्वर की अवधारणा विकसित हुई, जिसे सती सावित्री एवं माता सीता के आदर्श चरित्रों से महिमामंडित किया

गया। लेकिन सदियों से चली आ रही इस पुरुषवादी अवधारणा पर आधुनिक काल में गतिरोध आने लगे। यशोधरा, उर्मिला आदि परम्परागत स्त्रियाँ आधुनिक काल में प्रशाकुल नजर आयीं, जिससे पुरुषवादी महानता पर प्रश्नचिन्ह लगे। बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक दशकों में प्रवाहमान भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन में स्त्रियों ने घर की चारदीवारी को लांघकर बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया, आन्दोलन में पुरुषों के बराबर भागीदारी की।

इससे स्त्रियों में जागरूकता एवं नवीन आत्मविश्वास की भावना का उदय हुआ। देश को आजादी मिलने के उपरांत स्त्री-विमर्श का नया दौर शुरु हुआ, जिससे भारतीय स्त्रियाँ अपनी निजी एवं स्वतंत्र अस्मिता को तलाशती नजर आयीं। यहाँ पर आकर पति परमेश्वर की परम्परागत अवधारणा के प्रति स्त्री का मोहभंग हुआ तथा वह पुरुष से संघर्ष करते हुए उससे बराबरी अर्थात् समानता के अधिकार को प्राप्त करने के लिए अग्रसर हुई।

विषय-विवेचन: पश्चिमी देशों के समाजों से आगत समानता एवं स्वतंत्रता की इन अवधारणाओं को भारतीय स्त्रियों द्वारा गृहीत किये जाने के परिणामस्वरूप स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों में तनाव एवं बिखराव की शुरुवात हुई। सुप्रसिद्ध लेखिका मन्नू भंडारी द्वारा रचित 'आपका बंटी' (प्रकाशन वर्ष 1970) नामक उपन्यास की पृष्ठभूमि स्त्री-पुरुष सम्बन्धों के इसी तनाव एवं बिखराव की करुणगाथा है। जिसमें टकराव तो स्त्री और पुरुष के अहम् का होता है लेकिन इसमें पिसता है निरीह किशोरवय बंटी, जिसमें उसका कोई दोष नहीं है। इस उपन्यास के कथानक में कलकत्ता शहर में ऊँचे ओहदे पर कार्यरत अजय बत्रा एवं संभवतः इलाहाबाद शहर के किसी कॉलेज में प्रिंसिपल पद पर कार्यरत शकुन उर्फ मिसेज बत्रा के दस वर्षों के टूटते-बिखरते वैवाहिक सम्बन्धों को रेखांकित किया गया है। अजय और शकुन के वैवाहिक जीवन के प्रारंभिक तीन-चार वर्ष उम्मीदों से भरे हुए रहे, इसी दौरान बालक बंटी का जन्म हुआ। लेकिन इसके बाद उनके गृहस्थ जीवन की धुरी लड़खड़ा जाती है तथा वे दोनों अलग-अलग शहरों में रहने के लिए विवश होते हैं। इसमें बेटे बंटी के प्रति दोनों का भावनात्मक लगाव भी इनको जोड़कर रखने में सहायक नहीं होता। बल्कि बेटा बंटी अपने पिता को छोड़कर माँ के साथ रहने को मजबूर होता है। जबकि वह माता व पिता दोनों के साथ रहना चाहता है। पिता जब अपने बेटे से मिलने इलाहाबाद आते हैं तो बंटी भरसक प्रयास करता है कि माँ और पिता में दोस्ती हो जाय, दोनों साथ-साथ रहने लगे।

लेकिन अपने बेटे के मनोजगत से अनजान शकुन कभी तो बंटी को हथियार बनाकर पति अजय से प्रतिशोध लेती नजर आती है तो कभी बंटी में तन्मय होकर अपने जीवन की सार्थकता तलाश करती दिखती है। अन्ततः दोनों का दस वर्षीय वैवाहिक जीवन टूट जाता है, जिसकी परिणति अदालती तलाकनामे से होती है। अगर लेखिका के शब्दों में कहे तो "जैनेन्द्रजी ने स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों को जिस एकांतिक दृष्टि से देखा है, उसका एक उसका एक अनिवार्य आयाम बंटी भी है।

शकुन और अजय तो आपसी तनाव की असहनीयता से मुक्त होने के लिए एक दूसरे से मुक्त हो जाते हैं, लेकिन बंटी क्या करे? वह तो समान रूप से दोनों से जुड़ा हुआ है, यानि खंडित निष्ठा उसकी नियति है।”¹ चूंकि बंटी पिता का साथ छूटने पर अपनी माँ शकुन के साथ अलग शहर में रहता है। इसलिए बंटी के मनोजगत को समझने के लिए माँ-बेटे के आपसी सम्बन्धों का विश्लेषण करना होगा। माँ और बेटे का रिश्ता अन्य रिश्तों की अपेक्षा कहीं अधिक नाजुक और आत्मीयता से परिपूर्ण होता है, जिसमें स्वार्थ का पूर्णतः निषेध माना जाता है। बच्चे की भावनाओं की उपेक्षा करके या कहे कि मातृत्व की उपेक्षा करके किसी भी माँ के लिए अपने व्यक्तित्व के बारे में सोचना या अपनी ही आशा-आकांक्षाओं को पूर्ण करने के लिए प्रयासरत रहना असंभव चाहे न हो पर कठिन तो बहुत ही है। लेकिन शकुन चक्की पीस-पीसकर अपने बेटे का जीवन संवारने वाली परंपरावादी माँ नहीं है। बल्कि वह स्वतंत्र व्यक्तित्व, आकांक्षाओं और आजीविका के साधनों से तृप्त आधुनिक माँ है। इस आधुनिक स्त्री और माँ के आपसी द्वन्द्व का विश्लेषण ही शकुन को वर्तमान स्वरूप प्रदान करता है। लेखिका के विचारानुसार “ मातृत्व और व्यक्तित्व का यह द्वन्द्व ही शकुन के चरित्र की पूंजी है। जब उसका मातृत्व प्रबल होता है तो उसका अतृप्त-उपेक्षित व्यक्ति-पक्ष प्रश्रवाचक बनकर उसे मथने लगता है और जब उसका व्यक्ति-पक्ष प्रबल होता है तो उसका मातृत्व तिलमिलाने लगता है। पर शकुन के जीवन की सबसे बड़ी त्रासदी तो यह है कि व्यक्तित्व और मातृत्व के इस द्वन्द्व में न वह पूरी तरह व्यक्ति (शकुन) बनकर जी सकी और न पूरी तरह माँ।”² यह त्रासदी केवल शकुन की ही न होकर आधुनिक स्त्री जीवन की सामुहिक त्रासदी है। इस अंतराल में कलकत्ता में निवासरत पति अजय बत्रा मीरा नाम की स्त्री के साथ अपनी दूसरी शादी कर लेता है तथा उनके चीनु नामक एक बालक पैदा होता है। दूसरी ओर इलाहाबाद शहर के एक कॉलेज में पीछले सात वर्ष से कार्यरत तथा विभागाध्यक्ष से प्रिंसिपल के पद पर आसीन पत्नी मिसेज बत्रा उर्फ शकुन शहर के ही प्रतिष्ठित चिकित्सक डॉ. जोशी की ओर आकर्षित होती है, जिसका निमित्त बेटा बंटी ही बनता है। लेखिका के शब्दों में “पीछली सर्दियों में बंटी बीमार हो गया था तो कितनी आत्मीयता और एहतियात से संभाला था उसे। केवल बंटी को ही नहीं, बुखार के बढ़ते हर पाइंट के साथ हौसला खोती और घबराती शकुन को भी संभाला था।”³ इस तरह बंटी की बीमारी के कारण शकुन का डॉ. जोशी से परिचय हुआ। शकुन अपने पति से अलग होकर रहती है, यह सभी को मालूम था। अतः डॉ. जोशी ने शकुन से बंटी के पापा के विषय में कुछ नहीं पूछा। हाँ, अपनी पत्नी प्रमीला की मृत्यु की सूचना देकर डॉ. जोशी ने बिना कुछ कहे ही बहुत कुछ कह दिया था। लेकिन बंटी को डॉ. जोशी के साथ अपनी मम्मी का मिलना पसंद नहीं आता, जिसका वह प्रतिकार भी करता है। अन्ततः शकुन डॉ. जोशी से विवाहित होकर अपने कॉलेज के बंगले को छोड़कर बंटी के साथ डॉक्टर की कोठी में रहने चली आती है। जहाँ पर डॉ. जोशी की स्वर्गीय पत्नी प्रमीला से उत्पन्न एक लड़की जोत तथा छोटा भय्या अमि का साथ उन्हें मिलता है। लेखिका के शब्दों में “वह ममी के साथ अकेला ही आया है इस घर में पहली बार। ममी ने कई बार कहा था- कहा ही नहीं आग्रह किया था कि चल बेटा, तुम्हें जोत ने बुलाया है या कि डॉक्टर साहब ने खासकर तुझे आने को कहा है। पर वह कभी नहीं आया।”⁴ लेकिन आज उसे किसी ने नहीं बुलाया है, शायद ममी ने भी कोई आग्रह नहीं किया। फिर भी अपने घर के उजड़ जाने पर उसे आज इस घर में आना ही था, जो उसका

घर नहीं था तथा यहाँ पर आकर ममी भी उसकी नहीं रही, वह डॉ. जोशी की होकर रह गयी।

सच तो यह है कि ममी के साथ डॉ. जोशी के घर में आकर बंटी अपने को सहज नहीं रख पाता। वह अपने को इस घर में अनफिट व फालतू महसूस करता है। डॉ. जोशी की डिस्पेंसरी के सामने लगे ‘लाल तिकोन’ के निशान को बंटी घूर-घूरकर देखता है। तभी उसके जेहन में डॉक्टर जोशी के कहे शब्द तैर जाते हैं – ‘इस देश में तो तीन भी नहीं, बस दो बच्चे पैदा करने चाहिए। तीसरा बच्चा फालतू बच्चा- तीसरा बच्चा बंटी, इस घर में फालतू बंटी।’ अपने घर से उजड़कर बंटी जैसे सभी जगह से उखड़ गया, उसका मन कहीं नहीं लगता। जब वह अपने स्कूल के क्लास में होता है तो उसके मन में घर तैरता रहता है – ‘ममी, अमि, ममी का कमरा, कमरे का जादू और भी जाने क्या-क्या।’ और जब वह घर में होता है तो उसके आँखों के सामने कभी स्कूल तैरता है, तो कभी अपना पुराना घर, उसका लगाया बगीचा, ममी- वहाँ वाली ममी, जो उसकी अपनी थी। वह अपने पापा को याद करता रहता है कि वे रेल में बैठकर उससे मिलने आएँगे? साथ ही, वह निश्चय करता है कि ‘आज की रात को वह अपने पापा को जरूर-जरूर चिट्ठी लिखेगा, जिसमें अपने मन की सारी बातें लिख डालेगा।’

डॉ. जोशी के घर-परिवार में रहते हुए किशोरवय बंटी के बाहर का ही नहीं बल्कि भीतर का भी जैसे सब कुछ थम गया है। उसकी जिद, गुस्सा, रोना-चिल्लाना थमा ही नहीं बल्कि वह सहमा-सहमा-सा रहने लगा है। आज जब वह स्कूल से लौटा तो मम्मी घर में ही मिलीं, लपककर उसका बस्ता लेते हुए बोलीं –आ गया बेटा! तभी बंटी की नजर पलंग पर बिखरे हुए कागजों पर पड़ी। उसने पहचाना, पापा के लिए लिखे हुए अपने पत्रों को, जिन्हें वह कभी पूरा नहीं कर सका। जाने कितने पत्र उसने शुरू किये और बिना किसी को पूरा किये कपड़ों की आलमारी के नीचे दबाता गया, जिन पत्रों को ममी निकालकर लायी हैं। अगले दिन सुबह मालूम हुआ कि पापा उसे लेने आ रहे हैं, तभी बंटी ने सोच लिया कि वह एकबार भी पापा को मना नहीं करेगा, वह मम्मी को छोड़कर पापा के साथ कलकत्ता शहर चला जायेगा। स्टेशन पर बंटी ने ही पापा को पहचाना, देखते ही हमेशा की तरह लपककर उसे बाँहों में भर लिया और गोद में उठाकर ढेर सारे किस्सू दियो। फिर जोर से अपने सीने से चिपका लिया। पापा की बाँहों में भिंचे-भिंचे, सीने से चिपके-चिपके बंटी के मन में बहुत दिनों से जमा हुआ कुछ पिघलने लगा। अनायास ही उसकी आँखों से आँसू आ गये, उन्हें भीतर-ही-भीतर पीता हुआ वह पापा की गोद से उतर गया।

सरकिट हाउस में ठहरे पापा जब शाम को डॉ. जोशी के घर आये तो मम्मी ने उन्हें ऐसे नमस्ते किया जैसे अजनबी को कर रही हों। पापा ने जब उसे प्यार से अपनी गोद में बिठाकर पूछा - ‘ बेटा, हमारे साथ कलकत्ता चलोगे न ? मैं तुम्हें लेने आया हूँ।’ तो मम्मी की ओर देखते-देखते ही वह गुस्से में ऐसे बोला जैसे पापा को नहीं, मम्मी को जवाब दे रहा हो – ‘ जरूर चलूँगा, मैं यहाँ बिल्कुल नहीं रहूँगा।’ पापा ने उसे अपनी बाँहों में समेट लिया तो बंटी के मन में जमा हुआ गुस्सा जैसे बह आया। वह पापा से चिपका-चिपका ही रो पड़ा। पापा ने कसकर उसे सीने में चिपका लिया, ‘ रो मत बेटे, बेटे रो मत।’ और पापा की आवाज भी भीग गई। इसी क्षण उसकी ओर देखती मम्मी की आँखें बिल्कुल सूखी हैं, बिना आँसू की भीगी-भीगी आखों। दूसरे दिन भी मम्मी नहीं रोयीं, उसने एक बार भी नहीं कहा कि ‘तू मत जा बंटी

तो वह खुद रो पड़ा, छिपकर बाथरूम में। अगले दिन मम्मी कॉलेज नहीं गयीं, चुपचाप बंटी का सामान जमा करती रहीं। पापा जब टैक्सी लेकर घर आये तो बंटी दौड़कर पापा के पास जाकर खड़ा हो गया। भीतर ही भीतर सहमा हुआ, पर ऊपर से जैसे सधा हुआ। तभी घर के भीतर से निकलकर मम्मी आयीं। उन्होंने एकबार पापा की ओर देखा और फिर बंटी की ओर देखा। फिर धीरे से आगे बढ़कर उन्होंने बंटी को पकड़कर अपनी ओर खींचा और प्यार किया, पर बोलीं कुछ भी नहीं। स्टेशन पर लोगों की भीड़, रेलगाड़ी में बैठा खिड़की से झांकता बंटी और इसके साथ ही बहुत सारा शोरा। तभी गाड़ी चल दी और जो लोग स्टेशन पर छोड़ने आये थे, वे भी छूट गये, हाथ हिलाते हुए डॉ. साहब, अमि और जोता। अब अपरिचित चेहरों के बीच दहशतभरा बंटी, वह उठकर पापा के पास चला गया और उनसे एकदम सट गया। कलकत्ते में बंटी के पापा का बहुमंजिला इमारत में स्थित घर। सीढ़िया चढ़कर एक गलियारे में खड़े पापा कॉलबेल की बटन दबा रहे हैं। 'खट' की आवाज से दरवाजा खुलता है, बंटी की नजरें झुक जाती हैं। तभी आवाज सुनाई पड़ती है – 'अरे आ गए तुम? मैं सोच रही थी, एकाध दिन की देर हो जाए इस बारा।' बंटी के मन में पहली बात यह उभरी – 'यह ममी नहीं है।' तभी एक बाँह पूरी पीठ को घेरती हुई बंटी के कंधे पर आ टिकी – 'ओहो! यह है बंटी साहब! तुम तो बहुत प्यारे-प्यारे हो भाई! हमारे पास आओ बच्चे इतना शरमा क्यों रहे हो?' 'बच्चे' का संबोधन कान में पड़ते ही बंटी की नजर ऊपर उठी, सामने मुस्कराता हुआ चेहरा लेकिन ममी से अलग। सब लोग खाने की मेज पर बैठे हैं, बंटी वैसे ही चुपचाप, नजरें नीची किये हुए बैठा है। कलकत्ता के स्कूल में दाखिले के लिए बंटी का साक्षात्कार हो रहा है, 'सर पूछ रहे हैं- 'व्हाटस योर नेम डियर?'' 'अरूप बत्रा!' बंटी को लग रहा है, जैसे उसकी आवाज काँप रही है। 'यू हेव कम विद योर फादर?' बंटी सिर्फ धीरे से सिर हिला देता है। 'व्हाटस योर फादर?' बंटी एक क्षण सर की तरफ देखता है, फिर नीचे देखने लगता है। समझ ही नहीं आता कि क्या कहे। 'टेल मी अरूप!' पर जवाब नहीं आता। उसे मालूम ही नहीं। तभी... 'माइ मम्मी इज प्रिंसिपल!' जाने कैसे उसके मुँह से निकल जाता है और कहने के साथ वह खुद रूआँसा हो जाता है।

निष्कर्ष:- दरअसल अपनी जड़ों से कटकर किशोरवय बंटी का व्यक्तित्व संकुचित हो जाता है तथा स्कूल में दाखिला पाने में वह असफल होता है। अतः उसके पापा रामकृष्ण मिशन के हॉस्टल में रखकर उसकी पढ़ाई का इंतजाम करते हैं। जिससे वह माता व पिता दोनों से ही दूर रहकर एकाकी जीवन जीने के लिए विवश होता है। लेखिका के अनुसार – “बंटी की यह यात्रा घर-परिवार की संश्लिष्ट इकाई से टूटकर क्रमशः अकेले, जड़हीन, फालतू और अनचाहे होते जाने की यात्रा है। साथ ही, बंटी किन्हीं दो-एक घरों में नहीं बल्कि आज के अनेक परिवारों में साँस ले रहा है- अलग-अलग संदर्भों में, अलग-अलग स्थितियों में।” जो किशोरवय बालकों के लिए अत्यंत त्रासदकारी स्थिति होती है। जिसके लिए आधुनिक जीवन में टूटते-बिखरते स्त्री-पुरुष सम्बन्धों को जिम्मेवार ठहराया जा सकता है। साथ ही, हम सभी को इस तरह की परिस्थितियों से बचने का भरसक प्रयत्न करना चाहिए।

संदर्भ सूची:-

1. मन्नु भंडारी, आपका बंटी, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., दिल्ली, 17वाँ संस्करण -2022 जन्मपत्री: बंटी की से उद्धृत ;
2. मन्नु भंडारी, एक कहानी यह भी, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., दिल्ली, 5वाँ संस्करण - 2019, पृष्ठ -119-120 ;
3. मन्नु भंडारी, आपका बंटी, पृष्ठ -46 ;
4. वही पृष्ठ -126 ;
5. मन्नु भंडारी, आपका बंटी, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., दिल्ली, 17वाँ संस्करण -2022 जन्मपत्री: बंटी की से अलग- अलग उद्धृत ।